राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय क्षितिज पर हिन्दी की दशा एवं दिशा।

हिन्दी विभाग, ओड़िशा केन्द्रीय विश्वविद्यालय, कोरापुट
द्वारा आयोजित

त्रिद्विसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी

15–17 मार्च, 2023

कोटि–कोटि कंठों की भाषा
जन–मन की मुखरित अभिलाषा
हिन्दी है पहचान हमारी,
हिन्दी हम सब की परिभाषा

मुख्य संरक्षक

प्रो. (डॉ0) चक्रधर त्रिपाठी
कुलपति, ओड़िशा केन्द्रीय
विश्वविद्यालय, कोरापुट

आयोजन–सचिव

डॉ० जंगबहादुर पाण्डेय
अतिथि प्राध्यापक, हिन्दी विभाग,
ओड़िशा केन्द्रीय विश्वविद्यालय,
कोरापुट–763004
चलभाष: 9431595318, 8797687656
द्रुत डाक– pandey_ru05@Yahoo.co.in

परामर्शक मंडल

डॉ० नरसिंह चरण पण्डा
संस्कृत विभाध्यक्ष
डॉ० हिमांशु शेखर महापात्र
अतिथि प्राध्यापक
डॉ० प्रदोष कुमार स्वाईं
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
डॉ० रमेंद्र कुमार पाढ़ी
अध्यक्ष, शिक्षा विभाग

संरक्षक–मंडल

श्री असित कुमार दाश
कुलसचिव
श्री के० कोसला राव
वित्त पदाधिकारी
डॉ0 सुधेन्दु मंडल
कुलपति सलाहकार
डॉ0 प्रकाश पट्टनायक
प्रभारी नियुक्ति सेल
श्री संजीत कुमार दाश
अंग्रेजी व हिंदी विभाग प्रभारी
डॉ0 बी० एन० प्रधान
पुस्तकालयाध्यक्ष
डॉ0 फगुनाथ भोई
पी० आर० ओ०

संयोजक–मण्डल

डॉ० हेमराज मीणा
अतिथि प्राध्यापक, हिन्दी विभाग
डॉ० मयूरी मिश्रा, हिन्दी
डॉ० सौम्यरंजन दाश, हिन्दी
डॉ० रानी सिंह, हिन्दी
डॉ० दुलुमनि तालुकदार, हिन्दी
डॉ० जगदाले अप्पासाहेब गोरक्ष, हिन्दी

स्थान: हिन्दी विभाग, ओड़िशा केन्द्रीय विश्वविद्यालय, कोरापुट

Email: cuo.dh.con2023@gmail.com
Website : www.cuo.ac.in
पोस्ट– नादे, सुनाबेड़ा, जिला– कोरापुट पिन–763004

विषय की अवधारणा

हिन्दी मात्र भाषा ही नहीं, हमारी मातृभाषा भी है। भाषा किसी भी राष्ट्र, समुदाय या समाज की अस्मिता की पहचान है, उसका गौरव है। भाषा रहित राष्ट्र या समुदाय की कल्पना भी नहीं की जा सकती। जिस प्रकार किसी भी देश की भौगालिक सीमाएँ उसे आकार प्रदान करती हैं, उसी प्रकार धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक परंपराओं में उस देश की आत्मा बोलती है और उस आत्मा को स्वर प्रदान करती है, उसकी अपनी भाषा मातृभाषा।

हिन्दी भारत की आत्मा है। यह भारतीय अस्मिता की संरक्षिता है। भारतीय संस्कृति आध्यात्मिकता, नैतिक चिंतन मनन सार्वभौमिक दर्शन तथा ज्ञान–विज्ञान की अभिव्यक्ति एवं सर्जना का माध्यम भी है। तभी तो राष्ट्रकवि दिनकर ने इसे **"हृदय की वाणी"** कहा है। हिन्दी भारतवर्ष के हृदय की वाणी है। हिन्दी भाषा में वह क्षमता है, जो बदलती परिस्थितियों में भी स्वयं को ढ़ाल सकती है। नवीन परिवर्तनों को सहजता से ग्रहण कर सकती है। यही कारण है कि भारत वर्ष में अनेक जातियों और संस्कृतियों का आगमन हुआ, पर हिन्दी अपनी प्राण क्षमता के कारण अब तक न सिर्फ अक्षुण्ण बनी रही अपितु सशक्त एवं नवीन रूप में हमारी ताकत बनी हुई है। जिस समाज या देश की अपनी समृद्ध भाषा नहीं होती वह वैसे ही होता है जैसे बिना आत्मा का शरीर। हमारा यह सौभागय रहा है कि सभ्यता के आरंभ से हमारे पास एक समृद्ध भाषा रही है।

हिन्दी के प्रचार एवं प्रसार के लिए अब तक सरकारी स्तर पर 12 विश्व हिन्दी सम्मेलन हो चुके हैं। प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन 10–12 जनवरी, 1975 में नागपुर में प्रारंभ हुआ और 12वां विश्व हिन्दी सम्मेलन अभी–अभी 15, 16 और 17 फरवरी, 23 को फिज़ी के नादी शहर में आयोजित हुआ। जिसका विषय था हिन्दी पारंपरिक ज्ञान से कृत्रिम मेधा तक। यह हिन्दी के लिए शुभ संकेत है। जिस भाषा में सूर, तुलसी, कबीर, जायसी, और प्रसाद पंत, निराला, महादेवी वर्मा और दिनकर जैसे महाकवि पैदा हुए, उसका परचम देश और विदेश के क्षितिज पर फहरायेगा ही। गोपाल सिंह नेपाली ने ठीक ही लिखा है–

"प्रतिभा हो तो कुछ सृष्टि करो, सदियों की बनी बिगाड़ो मत।
कवि सूर, बिहारी तुलसी का, यह बिरवा नरम उखाड़ों मत।।
भंडार भरो जनमन की हर, हलचल पुस्तक में छपने दो।
हिन्दी है भारत की बोली, तो अपने आप पनपने दो।।
क्यों काट रहे पर पंछी के, पहुँची न अभी यह गावों तक।
क्यों रखते हो सीमित इसको, तुम सदियों से प्रस्तावों तक।।
औरों की भिक्षा से पहले, तुम इसे सहारे अपने दो।
हिन्दी है भारत की बोली, तो अपने आप पनपने दो।।

हिन्दी की इसी राष्ट्रीय–अंतरराष्ट्रीय महत्व को देखते हुए ओड़िशा केन्द्रीय विश्वविद्यालय, कोरापुट का हिन्दी विभाग 15–17 मार्च, 23 को त्रिद्विसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन कर रहा है।

मान्यवर,

सादर अभिनंदन।

हिन्दी स्वतंत्र भारत की राजभाषा ही नहीं भारत की अस्मिता का प्रतीक है। हिन्दी हमारी सभ्यता और संस्कृति का बोधक है। हिन्दी के विकास के लिए अब तक 12 विश्व हिन्दी सम्मेलन हो चुके हैं। हिन्दी भारत माँ की बिंदी है। आज राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय क्षितिज पर हिन्दी का परचम लहरा रहा है। कविवर डॉ० उमाशंकर चतुर्वेदी 'कंचन' के शब्दों में–

केश है कंघा है, कच्छा, कड़ा सिख धर्म के हाथ कटार है हिन्दी।
बात करो दिन–रात जहाँ मन चाहे बेतार का तार है हिन्दी।।
पूजा से पूर्व पुरोहित हाथ सजायी हुई यह थार है हिन्दी।
संस्कृति और संस्कार लिए हुई विश्व का तोरण–द्वार है हिन्दी।
संस्कृति को इकहार के रूप में जोड़ सके वो कड़ी है ये हिन्दी।
लेके सहारा चले अन्हरा उस अंधे के हाथ छड़ी है ये हिन्दी।
जीवन दान मिले जिससे विष मार सके वो जड़ी है ये हिन्दी।
प्यार से भारत माता कहें कि सुनो हमसे भी बड़ी है ये हिन्दी।।

आप हिन्दी भाषा और साहित्य के मूर्धन्य विद्वान/विदुषी ही नहीं अपितु हिन्दी के परम हितैषी और सजग प्रहरी हैं। ओड़िशा केन्द्रीय विश्वविद्यालय का हिन्दी विभाग राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय क्षितिज पर हिन्दी की दश एवं दिशा पर 15–17 मार्च, 2023 को त्रिद्विसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन कर रहा है। इस सारस्वत अनुष्ठान में आपका सहयोग और सानिध्य सादर प्रार्थित है। अतः आपसे अनुरोध है कि राष्ट्रीय–अंतरराष्ट्रीय क्षितिज पर हिन्दी की दशा एवं दिशा पर एक शोध परक आलेख Kruti Dev 010 में 10 मार्च, 2023 तक आयोजन सचिव या विश्वविद्याय संगोष्ठी के मेल पर भेजने की कृपा करें और मुदित प्रति साथ लाएं। इस अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी को अविस्मरणीय और शाश्वत बनाने के लिए एक आई० एस० बी० एन० पुस्तक और एक स्मारिका प्रकाशित करने की योजना है। आपके सकारात्मक सहयोग के बिना यह अनुष्ठान पूर्ण नहीं होगा। इस सारस्वत यज्ञ में आपकी उपस्थिति सादर सप्रेम प्रार्थित है।

आयोजन–सचिव

डॉ० जंगबहादुर पाण्डेय
अतिथि प्राध्यापक, हिन्दी विभाग,
ओड़िशा केन्द्रीय विश्वविद्यालय, कोरापुट–763004
चलभाष: 9431595318, 8797687656
द्रुत डाक– pandey_ru05@Yahoo.co.in

अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के प्रस्तावित विषय

1. राष्ट्रीय क्षितिज पर हिन्दी की दशा एवं दिशा
2. अंतरराष्ट्रीय क्षितिज पर हिन्दी की दशा एवं दिशा
3. राष्ट्रीय एकता में हिन्दी का योगदान
4. अंतरराष्ट्रीय एकता में हिन्दी का योगदान
5. राष्ट्रीय क्षितिज पर हिन्दी का बहुआयामी स्वरूप
6. अंतरराष्ट्रीय क्षितिज पर हिन्दी का बहुआयामी स्वरूप
7. सामासिक–सांस्कृतिक एकता में हिन्दी की भूमिका
8. विश्व का तोरण द्वार है हिंदी
9. भूमण्डलीकरण के परिप्रेक्ष्य में हिंदी
10. विश्व हिंदी सम्मेलन : अतीत, वर्तमान और भविष्य
11. प्रयोजमूलक हिन्दी का स्वरूप अथवा हिन्दी की प्रयोजनमूलकता
12. हिन्दी राष्ट्रभाषा बनाम राजभाषा
13. वैश्विक हिन्दी की चुनौतियाँ और समाधान
14. हिन्दी की वैश्विक दृष्टि और दिशा
15. वर्तमान में हिन्दी की दशा और दिशा
16. हिन्दी की वर्तमान दिशा और भविष्य
17. उच्चतर शिक्षा के क्षेत्र में हिन्दी
18. विश्व के विश्वविद्यालयों में हिन्दी का अध्ययन–अध्यापन
19. अंतरराष्ट्रीय परिदृश्य में हिन्दी
20. भूमंडलीकरण : हिन्दी के विकास की संभावनाएँ और चुनौतियाँ
21. देशांतरी हिन्दी
22. हिन्दी के वैश्विक प्रचार–प्रसार में सिनेमा की भूमिका
23. हिन्दी भाषी क्षेत्रों के हिन्दी साहेत्येतिहास की समस्याएँ
24. हिन्दी कैसे बने राष्ट्रभाषा और यू०एन०ओ० की भाषा
25. हिन्दी साहित्य को हिंदीतर भाषा भाषियों का प्रदेय
26. बाजार और मीडिया के बीच हिन्दी भाषा
27. हिन्दी के विदेशी विद्वान और उनका साहित्यिक योगदान
28. पाश्चात्य विद्वानों की दृष्टि में हिन्दी की गरिमा
29. हिन्दी के विकास में हिन्दी सेवी संस्थाओं का योगदान
30. हिन्दी के विकास में ओड़िशा का योगदान
31. हिन्दी के विकास में केन्द्रीय विश्वविद्यालयों का अवदान
32. हिन्दी की हकीकत
33. प्रवासी हिन्दी साहित्यः वर्तमान परिदृश्य
34. हिन्दी पत्रकारिता का वैश्विक परिप्रेक्ष्य
35. सांस्कृतिक सेतु निर्माण में हिन्दी भाषांतरण की भूमिका

नोट :– इनके अतिरिक्त हिन्दी की दशा एवं दिशा से संबंधित अन्य विषय भी हो सकते हैं।

पंजीयनलिंक के द्वाराकरें:–

https://docs.google.com/forms/d/e/1FAIpQLSd7G7TL2gHwEvh-xHL0Ol277twPvvTwR2upqnvH5iCipdKRLA/viewform?usp=sf_link

WhatssAPP Link :-

https://chat.whatsapp.com/G92uLuPCmAJ1VJDzazTkcE

पंजीकरण शुल्क बैंक खाता में जमा किया जा सकता है।

प्राध्यापक :– 1000 रू.
शोधकर्ता :– 500 रू.
विद्यार्थी :– 250 रू.
विदेशी प्रतिभाः– USD 70

खाता का विवरण :–

खाता संख्या	:– 41720434637
बैंक का नाम	:– स्टेट बैंक ऑफ इंडिया
शाखा विवरण	:– सुनोबेड़ा शाखा, कोरापुट
आई० एफ० एस० सी०	:– SBIN0001304

मुख्य तिथियाँ :–

लेख जमा करने का अंतिम तिथि	: 10 मार्च, 2023
विलंब से लेख जमा करने का अंतिम तिथि	: 12 मार्च, 2023
पंजियन शुल्क जमा का तिथि	: 12 मार्च, 2023
पूर्ण आलेख जमा करने का तिथि	: 14 मार्च, 2023

संगोष्ठी का विवरण

प्रथम दिन	– 15 मार्च, 2023
पंजीयन एवं किट्स वितरण	– 09:00 से 10:00
उदघाट्न	– सुबह 10:00 से 01:00
भोजनवकाश	– दोपहर 01:00 से 02:00
द्वितीय सत्र (विमर्श)	– दोपहर 02:00 से 05:00
अंतराल	– शाम 05:00 से 06:00 (अल्पाहार)
सांस्कृतिक कार्यक्रम	– शाम 06:00 से 08:00 (भोजनावकाश)
द्वितीय दिन	– 16 मार्च, 2023
तृतीय सत्र	– प्रातः 09:00 से 11:00
चतुर्थ सत्र	– 11:00 से 01:00
भोजनावकश	– दोपहार 01:00 से 02:00
पंचम सत्र	– दोपहर 03:00 से 05:00
समापन	– शाम 05:00 से 05:30
अंतराल	– 05:30 से 06:00 (अल्पाहार)
सांस्कृतिक कार्यक्रम	– शाम 06:00 से 08:00
तृतीय दिवस	– प्राकृतिक छटा अवलोकन
प्रात	– 09:00 से 01:00 तक
विदाई	– 03:00 बजे से

देश के संभावित–वक्तागण

1. डॉ० सूर्यप्रसाद दीक्षित, लखनऊ
2. डॉ० अनिल सुलभ, पटना
3. डॉ० त्रिभुवननाथ शुक्ल, जबलपुर
4. डॉ० के० एल० वर्मा, कुलपति, रायपुर
5. डॉ० तपन कुमार शांडिल्य, कुलपति, राँची
6. डॉ० सतीश कुमार राय, मुजफ्फरपुर
7. डॉ० सुभाष चंद्र राय, विश्व भारती शांतिनिकेतन
8. डॉ० अर्जुन प्रसाद, विश्व भारती शांतिनिकेतन
9. डॉ० शैलेश पंडित, लखनऊ
10. डॉ० अवधेश कुमार, वर्धा
11. डॉ० जयंत कर शर्मा, संबलपुर
12. डॉ० अजय कुमार पट्टनायक, भुवनेश्वर
13. डॉ० एस० के० पॉल, संबलपुर
14. डॉ० कमल प्रभा कपानी, बरगढ़
15. डॉ० कमल कुमार बोस, राँची
16. डॉ० एस० एन० शर्मा, राउरकेला
17. डॉ० मीना सोनी, झारसुगुड़ा
18. डॉ० अभिषेक शर्मा, कटक
19. डॉ० मुन्नी लाल जायसवाल, राउरकेला
20. डॉ० विनय कुमार पाठक, विलासपुर
21. डॉ० अरूण कुमार यदु, विलासपुर
22. डॉ० भरत सिंह, बोध गया
23. डॉ० राजेश जैन राही, रायपुर
24. डॉ० जनार्दन मिश्र, भोजपुर, आरा
25. डॉ० रास दादा रास, पटना/बैंगलौर
26. डॉ० महुआ मांझी, दिल्ली/राँची
27. डॉ० कुमारी मनीषा, छपरा
28. डॉ० पी० एस० दयाल यति, पटना
29. डॉ० मीना कुमारी, परिहार, पटना
30. डॉ० संजय श्रीवास्तव, मैसूर
31. डॉ० जितेन्द्र कुमार सिंह, राँची
32. डॉ० संजय कुमार, मिजोरम (आइजॉल)
33. सरोज कुमार, पंकज, सासाराम
34. डॉ० शशिकांत मिश्र, हैदराबाद
35. डॉ० एम० श्री निवास राव, तेलांगना

विदेश के संभावित–वक्तागण

1. डॉ० पुष्पिता अवस्थी, नीदरलैंड
2. डॉ० मिक्का वीता माक्की, हेलसिंकी, फिनलैंड
3. डॉ० सरिता बुद्धु, मॉरीशस
4. डॉ० सुरेश चंद्र शुक्ल, आलोक, नार्वे
5. डॉ० इला प्रसाद, अमेरिका
6. डॉ० संजिता वर्मा, काठमांडू, नेपाल
7. डॉ० कंचना झा, काठमांडू, नेपाल
8. अजित सिंह सिकंद, जर्मनी
9. डॉ० नीलू गुप्ता, कैलिपोर्निया
10. डॉ० विवेक मणि त्रिपाठी, हांगकोंग (चीन)